राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 9 अंक : 104 15 दिसम्बर 2005

सदस्यता शुल्क भारत व नेपाल में : वार्षिक : रुपए 40/–

एक प्रति: रुपए 5/–

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू व सत्संग सूची–2006 29
3. कर्म का फल (महर्षि शिवव्रतलाल जी) 30
4. अनमोल वचन व ज्ञान सार 31
5. सत्संग भावांश 32
6. सतगुरु कृपा 34
7. विशेष सूचना 35
8. मालिक और गुरु के इम्तहान लेने की आरजू मत कर (कहानी) 36

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org

इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 115

दिनांक : 11 जुलाई, 1993

समय : प्रात:

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों!

एक बात उन सेवादार प्रेमियों से कहनी है जो तीन दिन तक काम करते हैं। अगर कोई एक दिन भी सेवा में आता है तो समझो यह हमारा बहुत बड़ा भाग है। वर्ष भर में 12 दिन या 15 दिन सेवा के निकल जाते हैं। तो कोई बड़ी बात नहीं है। यह तो ऐसा है कि जैसा काम करते हैं उसमें दसवां, बीसवां हिस्सा निकाल देते हैं। पुण्य हो जाता है। कोई तकलीफ नहीं होती है। पर कई सत्संगी सोच लेते हैं कि क्या तनख्वा मिलती है। बेकार में बंधे पड़े हैं। हमारे से तो उस टाइम नहीं जाया जाता है। परन्तु जो सेवा छोड़ देते हैं तो उससे नुकसान भी हो जाता है। पता नहीं कितनी बातें ऐसी हो जाती हैं। बुखार भी चढ़ सकता है और भी तकलीफ हो सकती है। इसीलिए सेवा का जो टाइम निकलता है, निकाले। जो यह टाइम निकलता है, सत्संगी के लिए बड़ा कीमती है। सत्संगी के लिए। पर यह बात उन्हीं के लिए बताई जाती है जिनको यह ख्याल है कि आदमी का चोला बड़ा कीमती है और इसमें हमें कौन सा काम करना चाहिए? तुम गरीबों की मदद करना सीखो। उस परमात्मा की बंदगी करना सीखो। उस परमात्मा से प्यार करना सीखो। उससे तभी प्यार करोगे जब तुम पहले इन विचारों को पक्के कर लोगे। जो सेवा नहीं करेगा तो वह किसी से

प्यार भी नहीं करेगा। सेवा नहीं करेगा तो उसका न सत्संग से प्यार है और न सतगुरु से प्यार है। आप पूछोगे कि ये कैसे जी। जो आदमी चार पैसे लगा कर कोई चीज लेता है उससे उसका प्यार हो जाता है। इसी कारण से कि इस पर पैसे लगे हैं। वह उस चीज को वथा नहीं जाने देगा। बड़े ध्यान से रखेगा। अगर कोई चीज मुफ्त में आती है तो वह तो इसी तरह चली जाती है, वह इतना ख्याल नहीं करता है।

मैं एक मिसाल बताऊंगा। नाम तो मैं नहीं लूंगा। उस गांव के कहेंगे कि हमारी बुराई करता है। पर बुराई है नहीं। उस गांव में हमारी रिश्तेदारी भी थी। उस गांव में एक सत्संगिन को प्यार किया करता था। वह बड़ी अच्छी थी। एक दिन वह मुझसे बोली कि भाई, एक बात बताऊं? मैंने कहा–बता। उसने कहा–मेरी बहू नुलाई करने के लिए गई थी। बड़ी बहू वहां जाकर सो गई। उसने वहां काम नहीं किया। शाम को वे आई तो सारी बहुओं ने उसकी बुराई करना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा–सुबह ही जाकर ठण्डे–ठण्डे वक्त पर काम किया और धूप में सोती रही और शाम को भी ठण्डा होने पर ही काम में लगी। बाकी जब तक धूप रही यह छाया में ही सोती रही। उसने मेरे से यह बात कही तो मैंने कहा–बहू ! तूने ये क्या किया? तो उस बहू ने कहा कि मैंने तो जी आपका भला ही किया है। बुरा तो नहीं किया। क्योंकि आपके बेटे की शादी अधिक रुपये लगने के बाद हुई थी। मेरे बाप ने बहुत ज्यादा रुपये लिए थे। मैंने कहा–बारह हजार रुपये दिए थे। उस बहू ने कहा–इस छोटी बहू के आपने कितने रुपये दिए थे? मैंने कहा–इसके लिए तो हमने चार पैसे भी नहीं देने पड़े। उसने कहा–फिर आप यह भी सोचो कि मेरी कीमत थी। अगर दिन में मुझे धूप लग जाती तो तेरे बेटे की शादी करने में बारह हजार रुपये और लग जाते। मैंने तो आपका भला ही किया है। पूंजी

वाले पशु की तो सभी कद्र करते हैं। मेरे ऊपर तो आपकी पूंजी लगी हुई हैं। यह तो मुफ्त में आई है। यह अगर मर जाती तो मुफ्त में कोई दूसरी भी आ सकती है। सो मैंने तो तुम्हारे भले के लिए ही काम किया। उसने कहा–बेटी ! तू आगे मत बोल। वह अपनी और अपने बाप की बात भी रख गई और सच्चाई भी कह गई कि, जिस पर पैसे लग जाते हैं उसकी कद्र होती है। और भी बता दूंगा। मेरे महाराज ने एक पुस्तक छपवाई थी। जूई के बस अड्डे पर एक चाय बनाने वाला बैठता था, उसको वह पुस्तक दे दी। महाराज जी ने कहा–ले भाई यह पुस्तक पढ़ लेना। उसने कहा–लाओ महाराज जी। उसने वह पुस्तक ले ली। दस दिन के बाद महाराज जी उसके पास गए तो उसने कहा–मास्टर जी एक किताब और दे दो, आपके पास हो तो। महाराज जी ने पूछा–क्या तुझे यह पुस्तक अच्छी लगी? उसने कहा–अच्छी का तो मुझे पता नहीं है पर आठ दस दिन तक मेरा काम चल गया। इसके पन्नों में किसी को अचार रख कर दे दिया और किसी को तम्बाकू बांध कर दे दिया। महाराज जी ने कहा–अरे मूर्ख ! तू उसकी कद्र को नहीं समझ सकता है।

जूई गांव का कोई चिड़ न जाना। सो कद्र को तो जानते ही नहीं हैं। मेरे कहने का मतलब यही है कि जो अभ्यास में नहीं बैठेगा साधन अभ्यास और सुमरन ध्यान नहीं करेगा तो वह कद्र को कुछ भी नहीं जान सकता है। वह न तो सतगुरु की ही कद्र को जानता है और न सत्संग की ही कद्र को जानेगा और न ही वह सेवा भाव को ही समझेगा। जो ध्यान में दोनों वक्त 10 – 20 मिनट बैठता है, वह सारी कद्र जान जाएगा कि सतगुरु की क्या कद्र है? सेवा किसे कहते हैं? वह सेवा करते कभी नहीं घबराएगा।

एक प्रेमी सेवा में आता है। वह बेचारा बहुत बढ़िया है। उसको घर पर जाते ही दुखी कर लेते हैं। कहते हैं कि तू क्यों जाता है।

पर वह छुपकर आ जाता है। अब आप बताओ। वह दुखी तो होता है। वह भजन में बैठता है। उसके दिल में तो यही है कि सत्संग की सेवा ही सब से बड़ी है। सेवा के विषय में मैंने कहा भी बहुत है। तुम्हारे शास्त्र भी कहते हैं–

सेवा सिद्ध सफलता, सेवा विजय अपार।
सेवा में मेवा मिले, सेवा में करतार।।

सेवा करने से घर की बुढ़िया माता भी खुश हो जाती है। उसकी सेवा करने वाली बहू को अपना सारा जेवर बता देती है–बेटी ! यहां रखा है। तू ही मेरी सेवा करती है। यह तेरा ही है। सतगुरु भी सेवा से खुश हो जाता है। सतगुरु कौन है? सतगुरु तो राधास्वामी दयाल है। वह कुल मालिक है। इस सारी दुनिया का कर्त्ता है। उसे चाहे राम कहो, ओ३म् कहो, वाहे गुरु या अकाल पुरुष कहो। कई इनको ज्ञान कहते हैं। सो जो सारी ही दुनिया का कर्ता है, वह सतगुरु है। आप यह भी कहोगे कि फिर इन्सान को गुरु क्यों बनाते हो? मैं तो कभी भी नहीं कहता हूं कि इन्सान को गुरु बनाओ। इन्सान को गुरु बनाने से गिरावट आती है। इन्सान तो गुरु बन सकता है। सतगुरु नहीं बन सकता है। फिर आप कहोगे कि आप अपने सतगुरु की बड़ाई करते हो। सो मेरा वह सतगुरु ही था, गुरु नहीं था। गुरु और सतगुरु में भेद होता है। गुरु होता है–जो काम बताता है, रास्ता बताता है। सतगुरु उसे कहते हैं जिससे कुदरती ज्ञान प्रगट होते हैं। वह शब्द की महिमा बताता है। शब्द उसमें प्रगट होता है। जब शब्द प्रगट हो जाता है तो वह बरदाश्त भी करना जान जाता है। वह दूसरों का भला करना सीखता है, बुरा करना नहीं। जो दूसरों का भला नहीं करता वह चाहे कैसा ही क्यों न हो, चाहे परमात्मा भी क्यों न हो पर वह कभी भी भक्ति नहीं कर सकता है। जो दूसरों का भला करना सीख लेता है वह सतगुरु की बात को जान जाता है कि सतगुरु

कौन होता है और वह अपना जीवन भी सफल कर लेता है। जब सारी जिन्दगी गुजर जाती है और हम दूसरे का भला ही नहीं कर सकते हैं तो संसार में आकर क्या करेंगे? सारी जिन्दगी ही बुरा करते करते सारा समय निकल जाता है। फिर हमारे हाथ में क्या रहता है? मेरा सत्संग तो उन्हीं के लिए है जिन्होंने अपना जीवन पवित्र करना है। आप लोग यह कह सकते हो कि फिर उनमें क्या गुण आ जाता है? ऐसे आदमियों में बड़ी भारी शक्ति आ जाती है। रामायण में आता है–

राम के दर्शन संतों के माहिं।
राम और संत में अन्तर नाहिं।।

तुलसीदास जी ने कितनी अच्छी बात कही है कि राम में और संत में कोई अंतर नहीं है। आप यह प्रश्न भी कर सकते हो कि राम तो घटिया काम करने वाले को सजा दे देता है। पर आज संत महात्मा तो सजा नहीं देते हैं। यह बात दूसरी है। यह कभी न सोचना। परमात्मा सजा देता है तो वह किसी को बुरे काम करने से रोकता भी नहीं है। वह तो सभी को काम करते हुए ही देखता है। वह कभी किसी को नहीं कहता है कि तू मत कर। क्योंकि करने वाला तो करता रहता है। पर भोगने के वक्त परमात्मा उसका पर्चा निकाल देता है कि तूने यह भोगना है। पर सतगुरु कहता है कि यह काम तेरे लायक नहीं है। अगर तू ऐसा काम करेगा तो तुझे सजा भोगनी पड़ेगी। सतगुरु उसको रोक देता है। कह देता है कि यह काम तेरे लायक नहीं है। पर हम कैसे जीव हैं? हम करने के लिए स्वतन्त्र हैं पर भोगने के लिए परतंत्र हो जाते हैं। सो संत सतगुरु किसी को कुछ नहीं कहते हैं। वे कहते हैं कि तेरी मर्जी है तू अगर अपना काला मुंह करता है तो कर ले। तेरी ही मर्जी है। तुमने गरीबदास जी की वाणी सुनी है–

संतों की निंदा करे, मूर्ख काढ़े खोट।
बिन मारे मर ज्यांगे, पड़ै गजब की चोट।।

वे बिना मारे ही खत्म हो जाते हैं। अगर जहाज पहाड़ का मुकाबला करे। उसको टक्कर मारता है तो पहाड़ नहीं डिगता है। वह जहाज ही खत्म हो जाती है। सो संत तो चुप रहते हैं। वे कहते हैं-**हरि-इच्छा।** इस हरि–इच्छा के साथ ही परमात्मा उनकी मदद करना शुरू कर देता है। कई लोग कहते हैं कि भाई उसके पास क्या लोगे? वह तो अकेला ही है। अरे ! क्या बात हुई? कष्ण जी अकेला ही था और उसकी सारी सेना दूसरी तरफ थी। अठारह अक्षोहिणी सेना खत्म हो गई। वह अकेला ही बचा। जो परमात्मा का नाम है, वह अकेला ही है और उस अकेले के साथ में असंख्य आ जाते हैं। अकेले को जो छोड़ जाता है, वह बे–अकला हो जाता है। तुम कभी भी बे–अकला बनने की कोशिश मत करो। मैंने बताया था कि हम करने के वक्त तो स्वतन्त्र हैं परन्तु भोगने के वक्त पर परतंत्र बन जाते हैं। स्वतंत्र उसे कहते हैं किसी को पीट दिया, किसी के घर में अपनी मस्ती से घुस गया। फिर जब पकड़ा जाता है तो सजा देने वाला कोई भी दूसरा होता है। वह फिर कहता है कि सजा मत दो। पर रूकते नहीं हैं। वे कहते हैं कि भाई! तू उस वक्त तो स्वतंत्र था। अब तेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। अब तो हमारे हाथ में है। सो ही हम जो खोटे और घटिया कर्म करते हैं तो भोगने के वक्त हम परतंत्र हो जाते हैं और वह मालिक हमारे पर्चे निकाल कर सब के सामने दे देता है और उसका भोग हमें भोगना पढ़ता है। सो गरीबदास जी की थोड़ी सी वाणी मुझे याद आई है, वह बता देता हूं–

राम कहे मेरे संत को, दुख मत दीजे कोय।
संत दुखाये मैं दुखी मेरे आपे भी दुख होय।।

संत किसे कहते हैं? संत को तिलक नहीं लगा होता है। संत

उसे कहते हैं जो दूसरों की बातों को सहन कर ले। पर सब की बर्दाश्त तो गरीब आदमी ही करता है। जो ताकतवर होकर भी बर्दाश्त कर जाए वह गरीब ही है। परमात्मा के आगे विनती करता है। वह सब मालिक पर छोड़ देता है। क्योंकि उसको मालिक का सहारा समझता है। उस वक्त वह कहता है कि मालिक ही करेगा। पर कमजोर आदमी तो डरता हुआ ही कहता है कि सभी को मालिक ही देखेगा। क्या तगड़े आदमी आपने नहीं देखे हैं? अगर उसे कोई कमजोर आदमी गाली दे देता है तो वह कहता है कि तूने गाली दी ही क्यों? मुझे गाली देने वाला तो इस धरती पर ही नहीं था। उसी ताकतवर को उससे भी तगड़ा अगर कोई गाली दे देता है तो फिर वह यही कहेगा कि तुझे राम देखेगा। अरे ! तू उस कमजोर को भी तो कह सकता था कि तुझे राम देखेगा। पर वह तो गरीब था। राम उस वक्त तेरी मदद करता और दूसरे को भी तुझे कुछ नहीं कहने देता। वक्त आता है तो वह आप संभाल लेता है। राम का भरोसा हम छोड़ देते हैं और गिरावट आ जाती है। राम का भरोसा प्रहलाद ने, ध्रुव ने किया। मीरा और सहजो ने किया। कितनों की बातें बताऊ? जिन्होंने भरोसा किया वे दुख नहीं पाए, कभी भी। सो ही गरीबदास जी ने सीधी बातें कहीं है–

राम कहे मेरे संत को दुख मत दीजे कोय।
संत दुखाय मैं दुखी मेरे आपे भी दुख होय।।
हिरणाकुश उदर विदारिया, मैं ही मारा कंस।
आन सतावे मेरे संत को उसका खो दूं वंश।।

उसने वंश नहीं खोया हो तो बताओ? बता दो। उसने अनेकों के वंश खो दिए।

तेंतीस कोट की बंध छुटाई, रावण मारा खेत।
कला बढ़ाऊं मेरे संत की प्रगट करिहें मोय।।
गरीब दास सतगुरु कहे मेरा संत न निंदिए कोय।

वह कहते हैं कि मेरे संत की निंदा कोई भी न करना। नानक साहब जी कहते हैं–

सत का निंदक, महा हत्यारा।
संत का निंदक, धी का यार।
संत का निंदक, होय ख्वार।।
संत के निंदकों के मुंह काले।
संत के निंदक, फिट हों मतवाले।।

उन्होंने बड़ी साखी लिखी हैं। क्योंकि ऐसे आदमी शांति प्राप्त नहीं कर सकते हैं। पर आप प्रश्न कर सकते हो कि संत किसका नाम है? संत किसे कहते हैं? मैंने छोटी उम्र में तुलसी साहब की एक बात सुनी थी। तुलसी दास जी कहते हैं–

चार चिन्ह संत के, प्रत्यक्ष दिखाई दें।
दया, गरीबी, बंदगी परऔगुण ढक लें।

संत के चार चिन्ह होते हैं और वे प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। उनके चिन्ह हैं–दया, गरीबी, बंदगी और दूसरे के औगुण ढक लेते हैं। दया कैसी होनी चाहिए? दया राजा शिवि जैसी होनी चाहिए। आपने सुना होगा कि उसने अपना हाथ काट कर पलड़े में चढ़ा दिया। आखिर जब हाथ और पांवों के काटने के बाद भी पलड़ा नहीं उठा तो वे कटार लेकर अपनी गर्दन काटने को तैयार हुए। कहते हैं कि इन्द्र या अग्नि देवता थे, वे प्रगट हुए और उनसे कहा–शिवि! क्या करता है? हम तो तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए आए थे। धन्य हो तुम। हमने तो तेरा नाम ही सुना था कि तुम्हारे अन्दर दया है। तू वास्तव में दयालु है। संत को भी दयालु होना चाहिए। यदि उसमें दया नहीं है तो एक कोड़ी का भी नहीं है। आपने सुना होगा? मैं सीधे शब्दों में बता देता हूं–

दया बिना सिद्ध कसाई।

दया के बिना सिद्ध पुरुष भी कसाई होता है। सो उन्होंने

कहा–वाह, शिवि ! तुम्हें धन्य है। हम मान गए कि आप सचमुच ही दयालु हो। एक कबूतर के लिए आपने अपने सारे तन को ही तराजू में तोल दिया है।

गरीबी कैसी होनी चाहिए? यह मैं आपको क्या बताऊं? राजा हरिश्चन्द्र ने क्या किया? अपना सब कुछ बेच दिया और बर्बाद हो गया पर उसने अपनी गरीबी को नहीं छोड़ा।

जो आ जा हान, तो मत छोड़ धर्म की बाण।

वह धर्म जीत कर तुम्हारी मदद करेगा और अगर वह हार गया तो तुझे वह खा जाएगा। धर्म को कभी भी मत छोड़ो अगर तुम उसे नहीं छोड़ोगे तो वह तुम्हारी मदद करता रहेगा। मैं किस–किस की बातें बताऊं? सो ही उसने कहा–दया के साथ ही गरीबी हो। गरीबी कितनी चाहिए? जैसे हरिशचन्द्र की थी। हरिश्चन्द्र ने अपना सब ही कुछ कुर्बान कर दिया। अपना लड़का और रानी भी दे दी और उसको अपने हाथ से काटना चाहा। सब कुछ बर्बाद कर दिया। विश्वामित्र को उसे आशीर्वाद देना पड़ा। ये सब किसने किया? उसकी गरीबी ने ही ऐसा किया। सो गरीबी बहुत अच्छी चीज है सो दीनता रखो। कभी भी अहंकारी मत बनो। मैं सत्संगियों के लिए कहता हूं। अपने मन में शांति रखो। उस मालिक पर भरोसा रखो। हरिश्चन्द्र को भरोसा था। गरीबदास जी कहते हैं कि सतयुग फिर भी आएगा और हरिश्चन्द्र राजा फिर भी आएगा। मैंने गरीबदास की बातें सुनी हैं। उसने ऐसा क्यों कहा कि फिर सतयुग आएगा और फिर हरिश्चन्द्र आएगा और ऐसे ही घटना घटेगी? इसीलिए कहते हैं कि उसने अपनी गरीबी को नहीं छोड़ा। सो जब तक अहंकार रहता है धर्म नहीं रहता है। जिसमें धर्म है वह गरीबी व दीनता से ही रहेगा।

छोटा सा होकर रहना रे जगत में। तज दे तू गर्व गुमाना।
तेरी देखत कितने चले गए, देख लिए धर-धर ध्याना।

सो जिसने गर्व किया वह तो हारा ही है। जिसने दीनता रखी वह जीता है। सो दया–गरीबी के बाद बंदगी है। बंदगी कैसी होनी चाहिए? कई बार सत्संग में बताया है। वैसे तो हर एक ने ही बंदगी की महिमा गाई है। कितना ही दुख आ पड़े उस टाइम उस बंदगी को मत छोड़ो। जैसे प्रह्लाद को पहाड़ों पर से गिराया गया। उसके मुंह में आग भी डाली गई कि यहीं से राम बोलता है। पर उसने अपनी बंदगी को उसने अपने राम के नाम को नहीं छोड़ा। वह नाम ही पार उतारता है। सो ही महात्मा कहते हैं–

चाहना रख एक राम नाम की। सारे धोने धो देगी।
इससे दूजी चाहना तुझे, दुनिया जहान से खो देगी।।

चाहना तो एक राम की ही है। वह सारे धोने धो देती है। उससे दूसरी चाहना तो दुनिया जहान से खो देती है। आप यह कह सकते हो कि आप तो राधास्वामी नाम को लिए हुए हो। आप भी राम–नाम क्यों लेते हो? यह गलत बात है। जिन लोगों का ऐसा ख्याल है वे तो विरोधी हैं। संत नाम के विरोधी नहीं होते। संत तो दयाल होते हैं। नाम तो सारी दुनिया का एक ही है। नाम तो वही है जिसकी भी धुनि उठती है। आप पूछोगे कि क्या राम नाम की भी धुनि उठती है? हां, राम–नाम की भी धुनि उठती है। एक मंजिल पर तुम जाओगे तो वहीं से धुनि सुनती हैं। यह कोई भी बात नहीं है। आपने यह भी तो सुना है–

राम नाम के लेत ही, होत पाप का नाश।
ज्यों चिंगारी आग की, पड़े पुरानी घास।।

ये जो शब्दों से राम नाम बोलते हैं यह भी बहुत बड़ा है। पर वह नाम धुनात्मक है। उस नाम के लेने से कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं। वह लिया नहीं जाता है। तो फिर क्या होता है? उस नाम की तो महिमा बताते हैं। कहते हैं–

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मुझको भजे, तब पाऊं विश्राम।।

अब इस बात को सोचो, ये कहते हैं–मेरा साईं मुझको भजे तब ही विश्राम पाऊं। अब वह भजनानंदी को कैसे भजे? जब हम उन मंजिलों को तय करते हुए चलते हैं। अठारह मंजिलें हैं उन सभी मंजिलों की न्यारी–न्यारी अठारह धुनियां हैं। एक जगह पर सतखण्ड की धुनि है। जब उस तक पहुंचोगे तो पता लग जाएगा कि वह धुनि ही हमें उस परमात्मा से मिला देती है। वहां मंजिलें–मंजिलें जाना पड़ता है। सो ही उस धुनि को मत छोड़ो। उस नाम को कभी मत छोड़ो। वही नाम हमें परले किनारे ले जाता है। उसका सहारा लेना होता है। सो ड्राईवर पक्का होना चाहिए। अगर ड्राइवर पक्का है तो कहीं से भी वह गाड़ी को निकाल कर ले जाएगा। सतगुरु पूरा है तो वह कहीं भी नहीं अटकने देगा। वह उन मंजिलों से आगे ले जाएगा।

सो मैंने आपको संत के चार चिन्ह बताए हैं। दया और गरीबी। तो बता दिए। अब आई बंदगी। सो बंदगी से ही ध्रुव ने अपना काम बनाया। प्रहलाद ने भी बंदगी को नहीं छोड़ा। हरेक ही नाम तो न्यारा–न्यारा ही लेता रहा। ईशू–मसीह ने भी बंदगी नहीं छोड़ी। उसको गुलमेख ठोंक दी गई। फिर भी उन्होंने कहा कि ऐ मालिक ! ऐ मेरे पिता ! इन मेरे गुलमेख ठोकने वालों को कोई सजा न देना। ये बातें तो तुमने भी सुनी होंगी। उन्होंने कहा कि वे तो अज्ञानी हैं जिन्होंने मेरा विरोध किया। उनको आप ज्ञान दे देना। वह समझ जाए कि संतों की महिमा कैसी होती है। जो संतों से बैर करते हैं, मालिक उनको सजा न दे। मालिक उनको ज्ञान दे दे। संतों की महिमा क्या होती है? संत तो कल्पतरू वक्ष होते हैं। उनसे लाभ उठाना चाहिए। पर वे लोग समझे नहीं। ऐसा कहकर ईशू–मसीह ने चोला छोड़ दिया। पर क्या हुआ? उस

समय यहूदियों का राज था। आज यहूदियों के दो घर इकट्ठे नहीं मिल सकते हैं। यह सब किसने किया? उस मालिक ने उनको श्राप दे दिया। मालिक ने उनका ऐसा ढंग कर दिया कि–**संत दुखाये मैं दुखी।** आज तक भी उनके दो घर इकट्ठे नहीं मिलते हैं। सारे देश में ईसाई धर्म फैल गया है। पर सोचो। ईसाई धर्म वाले शराब भी पी लेते हैं। वे और भी (ऐसे ही) काम कर लेते हैं। पर उनकी दो चीजें बड़ी पक्की हैं। ये अगर संतमत में भी हों तो क्या संतमत में अच्छा काम नहीं हो सकेगा? उनके पास में दो चीजें है एक तो उनमें जाति–पाँति का ख्याल नहीं है। दूसरे वे किसी को भी गरीब नहीं रहने देते हैं। वे हरेक को प्यार करते हैं। यदि मालिक के बंदों से प्यार करोगे तो मालिक तुम्हारे से प्यार करेगा। वह चाहे कितना ही गरीब हो किसी भी जाति का हो जो कोई उनके पास जाता है वे उनको प्यार करते हैं। उसकी इतनी इज्जत करते हैं कि उसे अपने बराबर का कर लेते हैं। आज हम सत्संग में आते हैं पर कोई गरीब हो और वह कहता है कि वह गरीब है। उससे तो हम नफरत ही करना शुरू कर देते हैं कि परे चला जा। वहां बैठ जा। उधर जा बैठ ! अरे ! यह है तो मालिक का बंदा और है तो ये सत्संगी ही। इससे प्यार करना सीखो। पर हम प्यार करना नहीं सीखते हैं। जहां प्यार है वहां परमात्मा हाजिर बैठा है और जहां द्वेष है वहां परमात्मा नहीं है। अपने घरों में भी तुम प्यार रखोगे तो परमात्मा को भी तलाश करने की जरूरत नहीं है। परमात्मा वहीं मिल जाएगा और सारा स्वर्ग बन जाएगा। शांति आ जाएगी। सो प्यार करना सीखो। पर हम प्यार नहीं करते हैं। सो गिरावट आ जाती है।

मैंने ईशा मसीह की मिसाल दी है। उसने अपने पिता के आगे यही विनती की कि इनको सजा न देना। इनको ज्ञान, अक्ल और दिमाग देना। ये संत को समझ जाएंगे। ईशा मसीह ने तो पिता ही

पिता का जाप किया था। रामकष्ण परमहंस जी बड़े भारी महात्मा थे। वे विवेकानन्द के गुरु थे। उन्होंने तो माता–माता का ही जाप किया। नाम तो प्यार के कारण रख लिया जाता है। वही प्यार हमें धुनात्मक नाम में ले जाता है और हमारा जीवन सफल हो जाता है। उन्होंने माता का जाप किया और उस माता जी ने एक दिन कहा–महाराज जी ! मैं आपको कैसी लगती हूं? उन्होंने कहा–मुझे तो आप माता काली जैसी लगती हो। उसने कहा–आपको धन्य है। अब मैं कभी भी कोई ख्याल नहीं करूंगी। दोनों का जीवन बेहद पवित्र बीता। सुबह–सुबह उन सज्जन पुरुषों के नाम लेने से हमारे पाप दूर हो जाते हैं। वे बुरे काम सभी दूर चले जाते हैं। वाल्मीक जी कितने खुटकर्मी थे। मैंने तो एक महात्मा का शब्द सुना था–

वाल्मीक ब्राह्मण के मरे थे पिता और मात।
यानी सी उम्र में रहने लगा भीलों के साथ।।
देख-देख रंग ढंग करने लाग्या उत्पात।
तीर तो कमाण-बाण धार लिए जिन हाथ।।
विस्तर तारे मारे पीटे, बन में डोले दिन रात।
सप्तऋषि मिल गए उन पर चाल्या करने घात।।
अरे संगत करके निर्भाग की मन को हरदम कुकर्म चाहिए।

दुष्टों का संग करके मन हर वक्त कुकर्म की बातें ही सोचता रहता है। वही वाल्मीक कहते हैं–

राम नाम चेता नहीं, सारी पूंजी देई खोय।
भूल का विघ्न धन, घर में राख्या दबकोय।।
घर की कुड़की होने लागी, रती-रती लेंगे टोह।
माता-पिता बंधु नारी, नेड़े भी न लागे कोय।।
धर्मराज लेखा मांगे, वहां पर उत्तर देना होय।
तेरी समो निकल जा फाग की, फिर गया वक्त न पाइए।।

यह टाइम है परमात्मा की भक्ति करने का। यह परमात्मा के साथ फाग खेलने का टाइम है। अगर यह टाइम भी निकल गया तो फिर तुम क्या करोगे? कुछ भी नहीं कर सकते हो। जीवन बिगड़ जाता है। सो मैं उन महात्माओं के नाम ले–ले कर बातें बताता हूं कि वही वाल्मीक जी कितना ऊंचा ऋषि बन गया। उसकी रामायण पढ़ कर हम कहते हैं कि हमारा जीवन पवित्र हो जाता है। उनकी वाणी से हमारा जीवन पवित्र होता है। आप कहोगे कि कल तो आप कह रहे थे कि उनकी वाणी पढ़ने से नहीं उस पर अमल करो। फिर भी जिसकी तुम वाणी पढ़ते हो उसके जो भी गुण होते हैं कुछ न कुछ तुम्हारे अंदर आ जाते हैं अगर सच्चाई के साथ पढ़ते हैं। इसी को रेडीएशन कहते हैं। जिसने विरह में आकर जो बातें कही हैं वे हमारी मदद करती हैं। उसके परमाणु हमारे अंदर आ जाते हैं और हम बदल जाते हैं। सो उस परमात्मा की भक्ति में बड़ा भारी आनन्द है। सो मैं आप लोगों को बंदगी के बारे में समझा रहा था।

सो बंदगी कैसी हो? आपको कइयों की बंदगी बताई हैं। ध्रुव प्रहलाद और ईसा मसीह की, रामकष्ण परमहंस की मिसालें बताई हैं। नाम चाहे कोई भी लो। बंदगी उसी को कहते हैं कि उस नाम में मस्त हो जाए। वही नाम फिर मंजिलों पर ले जाता है। पर बंदगी तो सबसे बड़ी मन्सूर की थी। मैं तो सुनी हुई बातें कहता हूं कि वह मन्सूर किसी राजा का वजीर था, बहुत बड़ा। कहते हैं कि किसी ने उसकी चुगली कर दी। ये बुराई करने वाले भी बड़े जुल्मी होते हैं। वे खुद भी बुराई करके गिर जाते हैं। जैसे ओला जमीन पर पड़ता है तो वह खेती का नाश कर देता है फिर उसका खुद का भी नाश हो जाता है। फिर उस जमीन में कुछ नहीं बन सकता है। वह तो खत्म हो जाता है। इसी तरह संतों की निंदा करने वाले ओले की तरह खत्म हो जाते हैं। वे संत महात्मा तो

फिर भी फूट कर तैयार हो जाते हैं। अगर वे नहीं होते हैं तो उनकी कीर्ति तो रह ही जाती है। मूर्ति चली जाती है। कोई बात नहीं है। किसी ने मन्सूर की बुराई कर दी। उसने कहा–क्या तू वजीर है? उसने कहा–हां, जी ! उसने कहा–क्या तुझे पता है तेरे घर का क्या हो रहा है? मन्सूर ने कहा–मुझे तो पता नहीं है। घर में भी दुश्मन पैदा हो सकता है। जैसे महाराज अर्जुन साहब का भाई था, दुश्मन हो गया था। उसके भाई ने ही तो उसको दरिया में गोता मरवाया था। उसने मुसलमान भाइयों को बहका दिया। उन्होंने कह दिया कि सुबह ही अर्जुन साहब को गौ की खाल पहना कर जलूस निकाला जाएगा। अर्जुन साहब रात को ही दरिया में गोता मार गए। अपने पुत्र को तिलक कर वे चले गए। सो दुख बड़ी बुरी चीज होती है। शिकायत कर दी कि तेरी बहन मोडों के पास जाती है। मन्सूर तू वजीर है। तुम्हारे घर को बट्टा लगता है। उसने कहा–मैं कल देखूंगा कि वह कैसे जाएगी? शाम का टाइम हुआ और देर हो गई। यह बात आप लोगों को कई बार बताई हुई है। आपने सुनी है। जब शाम का टाइम हुआ और वह जाने लगी तो मन्सूर भी पीछे हो लिया। उसने सोचा कि आज मैं भी जाकर देखूंगा। वह तो महात्मा के लिए दूध का लौटा लेकर गई थी। वह महात्मा बोला–बेटी ! आज तो बहुत देर कर दी। क्या बात है? इतनी देर करके क्यों आई? अगर रास्ते में तुझे कोई कुछ कह देता तो मुझे बट्टा लग जाता। इस टाइम पर नहीं आना था। वह बाहर खड़ा सुन रहा था। वह बोली–महाराज जी! मैं इस टाइम तो नहीं आती, सुबह ही आ जाती। पर मेरे साथ दूसरी बात हो गई।

महात्मा ने पूछा–क्या हुआ? लड़की ने कहा–मेरी ससुराल से मेरे पतिदेव आए हुए हैं, मुझे लेने के लिए। सुबह ही मुझे जाना होगा। मैं सुबह आपको मिल नहीं सकती थी। इस बहाने से आपके

लिए दूध भी ले आई और इसके बाद पता नहीं आपके कब दर्शन कर सकूंगी। मैं तो अपनी ससुराल जा रही हूं। महात्मा ने कहा–अच्छा बेटी ! बैठ जा। अब महात्मा ने दूध पिया। दूध पीकर महात्मा ने कहा–ले बेटी ! यह दूध तू पी ले। प्रसाद ले ले। फिर तो तुझे जाना है। पता नहीं कब आकर प्रसाद लेगी। मन्सूर की उस बहन का नाम मन्सूरी था। उसने कहा–महाराज ! आज तो दया कर दो। महात्मा ने पूछा–किस चीज की दया कर दूं? मंसूरी ने कहा कि बाहर एक कुत्ता बैठा है। उस कुत्ते को ये दूध दे दो। मंसूर सारी बातें सुन रहा था। उसने यही कहा कि आज यह दूध उस कुत्ते को दे दो। संतों का निंदक कुत्तों से भी गया गुजरा होता है। महात्मा ने कहा–बेटी वह कुत्ता इस दूध का अधिकारी नहीं है। इसे तू ही पी ले। मंसूरी ने कहा–महाराज जी ! क्या संत इन बातों को देखते हैं? संत तो दयालु होते हैं। आपने ही तो बताया था–

कभी हम देते शीत मीत, कभी देते सिर सांटै।
हम सौदागर आए रे, जग तू मत ना नाटै।।

अर्थात् कभी हम शीत–मीत देते हैं और कभी हम सिर सांटे देते हैं। कोई बात नहीं है। आप दया कर दो। महात्मा ने कहा–ले बेटी ! तू उसको दे दे। महात्मा ने आवाज दी कि आजा भाई ! अब दीन होकर मंसूर उनके पांव में गिर पड़ा। उसने कहा–मैं सचमुच ही कुत्ता हूं। मैं कुत्ता इसी कारण से हो गया कि मैं दूसरों के कहने से मेरी बहन पर अविश्वासी बन गया। दूसरों के कहने से ही मैं महात्मा पर अविश्वासी बन गया हूं कि महात्मा भी गिरा हुआ है और मेरी बहन भी गिरी हुई है। मैं सचमुच ही कुत्ता हूं। आपकी यह बुराई मैंने अपने मत्थे पर लगा ली। महात्मा ने कहा–दूध को पी ले। मन्सूर ने दूध पीया। संतों के प्रसाद में ताकत होती है। वे जब खुश होकर देते हैं तो उस प्रसाद में बड़ी भारी ताकत होती है। वह प्रसाद लिया और प्रसाद लेते ही मंसूर की सुरत चढ़ गई। सुरत

चढ़ कर वह उस स्थान पर पहुंची, जिसे हम सोहम् कहते हैं। मुसलमान उसको अनहलक कहते हैं।

अनहलक कह हक को पहुंचा, सूली चढ़ा मंसूर।
दिवाने क्या गावै घर दूर।।

वह सोहम् का घर बड़ी दूर है। पर यह मैं दावे से कहता हूं कि सोहम् में अनादि मुक्ति नहीं है। सोहम् में मियादी मुक्ति है। जैसे स्वर्गों–वैकुण्ठों की बातें होती हैं, ऐसी ही मुक्ति है। फिर सोहम्–सोहम् करने से भी वह मुक्ति नहीं मिलती। सोहम् की धुनि सुनी जाती है अंतर में। अगर अंतर में धुनि नहीं सुनी है तो वह कच्चा है। वह कभी भी उस घर नहीं पहुंचेगा।

सोहम्-सोहम् क्या करे, सोहम् काल का नाम।

सोहम् का अर्थ तो यही है कि तू भी ब्रह्म और मैं भी ब्रह्म हूं। बूंद समुद्र को देखकर कहती है कि तू भी समुद्र है और मैं भी समुद्र हूं पर वह सतखण्ड तो और भी आगे रह जाता है। मेरे पास कई आदमी आए। सत्संग हो रहा था, अंटा में। एक भाई एम.एल.ए. था। उसने बड़ी भारी यज्ञ भी की थी। उसने बातें कीं। वह सवेरे ही बोला कि आपने तो सत्संग में हमारा नाम ही छोटा बता दिया। मैंने कहा–कौन सा? उसने कहा–आपने तो यह बात कह दी कि ओ३म् तो स्वर्गों–वैकुण्ठों में ले जाएगा। लफ्जों के ओ३म् से कभी शांति नहीं आएगी। जो ओ३म् शांति, ओ३म् शांति कहते हैं फिर भी भड़क उठते हैं। जब तुम ओ३म् की धुनि को सुन लोगे और औ३म् के पास पहुंच जाओगे तो कुदरती ही शांति आ जाएगी। फिर ये पांचों विषय एकदम हट जाएंगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, ओ३म् की धुनि सुनते ही ये विषय दूर चले जाते हैं। ओ३म् कोई छोटी चीज नहीं है। तीन लोक में ओ३म् बहुत बड़ा है। सोहम् इससे भी आगे है। उसने कहा–क्या इससे और भी आगे कुछ है? अब आप बताओ, उनको क्या समझाया

जाए। इस बात को लेकर वह हमारे एक सत्संगी के पास में गया तो उसने भी कहा–तुम संतों के पास जाकर बात सुनो। फिर पता लगेगा। वे ठीक कहते हैं। वे अपना तजुर्बा बताते हैं।

पर मंसूर ने ज्यों ही प्रसाद लिया उसकी सुरत चढ़ गई और जिसे हम सोहं कहते हैं उसमें से अनलहक–अनलहक की अपने आप ही धुनि निकलने लगी। अब मुसलमान बादशाह चिढ़ गया। किसी ने शिकायत कर दी कि महाराज ! क्या करते हो? मंसूर तो काफिर बन गया है। वह अनलहक कहता है कि मैं ही खुदा हूं। मैं ही सब कुछ हूं। बादशाह ने कहा कि इसको पकड़ लो और सजा दे दो। मैं सुनी हुई बातें कहता हूं। उसको बड़ी भारी सजा दी। कोई कहता है कि उसको रास्ते में गाड़ दिया। बादशाह ने हुक्म दे दिया कि उसको पांच–पांच जूते मारो। अब उस हुक्म के अनुसार मंसूरी भी आ गई। मंसूरी ने सोचा कि यह भाई है। जूते क्या मारूंगी? मंसूरी ने उसको पांच फूल मारे। जब उसने उसको पांच फूल मारे तो मंसूर रो पड़ा। वह चिल्लाया। मंसूरी ने पूछा–भाई ! क्या बात हुई? मैंने तो फूल ही मारे हैं। दुनिया तुझे जूते मार कर जाती है? उस वक्त तो नहीं रोये। क्या तुम मेरे पांच फूलों से ही रो पड़े? मंसूर ने कहा–बहन ! क्या तुझे पता नहीं है कि वे तो अज्ञानी हैं उनके जूतों का तो कोई दुख नहीं है। पर तेरे इन पांच फूलों का दुख है क्योंकि तू जानती है कि तेरा भाई किस मंजिल पर पहुंच गया है। इसीलिए कहते हैं–

जान बूझ साची तजै, करे झूठ से नेह।
वा की संगत राम जी, सुपनेहु मत देय।।

उसने कहा–बावली ! तुझे तो सब पता था। इसीलिये तेरी नासमझी पर मुझे दुख हुआ। क्योंकि तुझे पता था। इनको तो पता नहीं था। इनके मारने का मुझे कोई दुख नहीं था। जो सच्चा आदमी है, जिसे सब का पता है और वही घटिया बातें करता है

मालिक उसको फिर बख्शता नहीं है। लोग तो कहते हैं कि उसके पांव काट दिए गए। वह कुछ नहीं बोला। हाथ भी काट दिए वह कुछ नहीं बोला। उसकी अनलहक की आवाज निकलती रही क्योंकि वह तो कुदरती धुनि थी। वह तो नहीं बोलता था। जब उसकी आंखें फोड़ी गई तो भी कुछ नहीं बोला। बादशाह ने कहा–इस काफिर का सिर काट दो। तब मंसूर ने कहा–एक मिनट ठहर जाओ। उन्होंने पूछा–क्या करेगा? उसने एक मिनट अपना सिर झुकाया और इसके बाद उसने कहा अब काट लो। उन्होंने पूछा–अब क्या हो गया? मंसूर ने कहा–क्या तुम्हें पता नहीं तुमने मेरे हाथ काटे वे खुदा के चरणों में चले गए हैं और जो पांव काटे वे खुदा के चरणों में पहुंच गए और आंखें फोड़ दी तो बाहर की चीजें दिखनी बंद हो गई। मैं अंतर की चीजें सब देखने लग गया। मैं अंतर में सतगुरु के दर्शन करता हूं। जब तुम गर्दन काटने लगे तो मैंने एक मिनट के लिए मालिक से बंदगी की है कि हे मालिक ! आपको धन्य है मुझे परीक्षा में पार तार दिया। मैं गिरा नहीं। यह बड़ी दया है। पांव सिर सब कुछ ले लो। यह आपका ही है। आपने मुझे परीक्षा में पूरा उतार दिया यही बड़ाई की कि मेरी परीक्षा पूरी हुई। सो तत्काल उसका सिर काट दिया और मंसूर ने अपनी अनलहक की आवाज नहीं छोड़ी। इसे बंदगी कहते हैं।

यह तो दया, गरीबी और बंदगी के बारे में बता दिया। अब पर अवगुण ढकने की बातें करता हूं। यह आपने सुना होगा, गरीबदास जी की साख में आता है कि एक राजा का गुरु था। उस महात्मा का नाम जयदेव जी था। पंडित भी महात्मा होता है। महात्मा, महात्मा भी होता है और संत भी। इनका दर्जा एक ही होता है। ये एक ही हैं। कोई झगड़ा बाजी करे तो उनकी मर्जी है। ब्राह्मण किसको कहते हैं? जो ब्रह्म को पहचानता है। जो संत गति में चला जाता है। यह एक ही बात है। मैं तो इन्हें दो मानता नहीं।

सतलोक से आगे जो पहुंच जाता है, वही ब्राह्मण है। वही संत है। वही सब कुछ होता है। जयदेव जी वहां रहा करते थे। उनका एक शिष्य राजा था जो सेवा करता था। जब जयदेव जी चलने लगे तो राजा ने दो खच्चर मोहर अशर्फियों के भर दिए। महात्मा उन्हें लेकर चला गया। उसे रास्ते में दो डाकू मिल गए। उन डाकुओं ने हाथ काट कर उसको कूएं में डाल दिया और धन को ले गए। उसकी बहुत बेइज्जती हो गई। इतनी ही देर में कोई बंजारा आ गया। जब वह पानी निकालने लगा तो जयदेव बोल पड़ा। उसने उसको कूएं में से निकाल लिया। मैं सीधी और जल्दी से बात बता देता हूं। बंजारे ने पूछा–तू कौन है? उसने बताया कि मैं जयदेव हूं। ब्राह्मण हूं और राजा का गुरु हूं। बंजारे ने पूछा–हम क्या करें? जयदेव ने कहा कि मुझे राजा के पास पहुंचा दो। उन्होंने उसको राजा के पास पहुंचा दिया। राजा ने कहा–कौन है ऐसा, मेरे गुरु के हाथ काटने वाला? एक बार जुबान से निकाल दो। मैं उसके वंश को खत्म कर दूंगा।

आज से 15 वर्ष पहले की बातें हैं, मेरा और महेन्द्र सिंह मलिक का बड़ा प्यार है। वे भाई का नाता बरतते हैं। बड़ी इज्जत करते हैं। उस वक्त वह आ गया। पता नहीं उस समय वह एस. पी. था या कुछ और बना हुआ था। उसने पूछा–क्या बातें हैं? मैंने कहा–कुछ नहीं है। उसने कहा–नहीं आप को पता है। बताओ ये, ऐसी बकवास करने वाला कौन है? मैंने कहा–क्या करेगा भाई? उसने कहा–करेंगे। आप जानते तो हो। मैंने कहा–मुझे पता तो है। पर मैं बताऊंगा नहीं। मैं सच बताता हूं, मुझे पता था। अब भी मुझे पता है। पर क्या करूं? तुम सब ही उसको घेरा दे लोगे और उस को खा जाओगे। उस बुरे आदमी को। पर ऐसी बातें करने की कोई जरूरत नहीं है। यह तो प्रारब्ध होती है। मैं अर्जुन साहब की बातें बताऊंगा तब तुम्हें सब्र आ जाएगा? तो उसने मुझसे कहा कि

मुझे आप एक बार बता दो। मैंने कहा–मैं बता तो दूंगा। पर तू नेम कर ले कि कुछ नहीं कहेगा। उसने कहा–यह तो मुझ से बर्दाश्त नहीं होगा। मैंने कहा–फिर जाने दे। मैं नहीं बताऊंगा। मैंने उसको नहीं बताया। पर उसने अपना हिसाब लगाकर बताया कि बात आगे फूटी तो मैं आप ही इस को पकड़ लूंगा। इसी तरह से ऐसी बातें होती हैं।

अब राजा ने जयदेव से पूछा कि बताइए। गुरु की निंदा का ही दोष लगता है। मेरे गुरु के हाथ काटने वाला बख्शा नहीं जाएगा। उसने कहा–मेरे हाथ किसी आदमी ने नहीं काटे। ये तो मेरी प्रारब्ध ने ही काटे हैं। मेरे कर्म ही कुछ ऐसे थे। तुम्हें पता नहीं है। संतों की निंदा कोई भी नहीं करता है। उनके पिछले जन्म की प्रारब्ध ही ऐसी होती है। वही करवा देती है। किसी का सिर कटवा दिया। किसी का कुछ कटवा दिया यह प्रारब्ध ही होती है। फिर भी वे अपनी प्रारब्ध को धो जाते हैं। राजा बेचारा क्या करता? उसके हाथ ठीक करवाये। उसे वहां रहते कई दिन हो गये। एक दिन वे दोनों डाकू पकड़े गए। वे वहीं आ गए। उस महात्मा ने उनको देख लिया कि वे दोनों ही आ गए। जयदेव ने कहा–राजन्! ये कौन हैं? राजा ने कहा–ये तो बड़े भारी जालिम डाकू हैं। जयदेव ने कहा–नहीं, राजन् ! ये तो महात्मा हैं। ये डाकू नहीं हैं। राजा ने कहा–क्या करूं? क्या ये महात्मा हैं? जयदेव ने कहा–इनकी सेवा कर। उन डाकुओं ने भी देख लिया कि जिस महात्मा के हाथ काटे थे वहीं बैठा है। ये जरूर हमें मरवा देगा। पर नहीं। राजा ने उनकी सेवा करनी शुरू कर दी। राजा ने बड़ी भारी सेवा की। वे वहां बारह महीने रहे। तब उन्होंने कहा–राजन ! अब हम जाएंगे। राजा ने अपने गुरु को ये बात बताई कि महाराज ! वे महात्मा तो अब जा रहे हैं। इसे महात्मा कहते हैं। जयदेव ने कहा–मोहरों के दो खच्चर भर दो। साथ में दो नौकर भेज दो। वे उनको उनके

घर छोड़ आएंगे। उन महात्माओं को कोई तकलीफ न हो जाए। सुना नहीं–

हल्दी जरदी ना तजे, खटरस तजे न आम।
गुणवंता गुण ना तजे, औगुण तजे न गुलाम।।

गुलाम आदमी का कितना ही कुछ करो, वह अपने अवगुण को नहीं तजेगा। सज्जन आदमी अपनी सज्जनता को नहीं छोड़ सकता है। वे छुड़वा दिए और उनके साथ दो नौकर भेज दिए। रास्ते में उन सिपाहियों ने उनको कहा कि महात्मा जी ये जयदेव जी आप की बहुत मेर करते थे। वे बहुत बड़ाई करते थे कि महात्माओं ने ये किया, वो किया। तुमने उस पर क्या अहसान कर रखा है? दुष्ट आदमी दुष्टता तो नहीं छोड़ता है। उन्होंने कहा कि उस पर जो हमने अहसान किया है वह तो कोई भी नहीं कर सकता है। उन्होंने पूछा कि ऐसा क्या अहसान कर रखा है? उन्होंने कहा कि वह रानी के साथ बुरा भला हो रहा था। हमने उसको देख लिया। हमने राजा को नहीं बताया। यह अहसान कर रखा है। जब वे ऐसी बातें कह रहे थे तो ऊपर से शिला गिर पड़ी और गैबी शिला ने उन दोनों को दबा लिया। जो डाकू महात्मा बने हुए थे वे उस शिला के पूरी तरह नीचे आ गए। गरीबदास ने दोहों के रूप में बहुत कुछ इस बारे में कहा है। जब वे नीचे आए तो सिपाही खड़े–खड़े देख रहे थे। वे धन के खच्चर राजा के पास आ गए और उन्होंने कहा कि राजन् वे तेरे महात्मा तो मर गए और ये आपके खच्चर संभालो। ये मोहरें संभालो। राजा ने पूछा–वे महात्मा कैसे मरे? सच–सच बताओ? उन्होंने कहा–उनके ऊपर एक पत्थर की शिला गिर पड़ी। राजा ने पूछा–शिला क्यों आई? उन्होंने कहा–उस वक्त इस–इस तरह से बात कर रहे थे। उन्होंने जयदेव जी की बुराइयां की। बुराई करते–करते ही शिला आ पड़ी। उस वक्त राजा जयदेव जी के पास गए और उनसे

कहा–महाराज ! वे तो महात्मा नहीं थे। आपने तो जुल्म कर दिया। वे दोनों के दोनों ही मर गए। जयदेव ने पूछा–क्या वे मेरे भक्त मर गए? जयदेव ने अपने हाथ मारे कि मेरे भक्त मर गए। हाय मेरे भक्त मर गए। दोनों हाथों के झाबे निकल आए। वह महात्मा तेज पुंज होकर अपने घर में चला गया। सो–

निंदक मेरा मत मरो, जीवो आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया, निंदक के प्रताप।
निंदक नेड़े राखिए, आंगन कुटी छपाय।
बिन पानी बिन साबुन, निर्मल करे सुभाय।।

ये ताने मार–मार कर निर्मल कर देते हैं। इसलिए निंदक को नजदीक ही रखना चाहिए। निंदक तो मित्र होता है। उससे प्यार करो कि मालिक उसको दुख न दे। उसको कर्म अनुसार भोगना पड़ता है। इसे कहते हैं–पराये अवगुण को ढक लेना।

सो मैं अब आपको अर्जुन साहब की बात थी, वह बताऊंगा। अर्जुन साहब बैठे हुए थे। उनके भाई ने क्या किया? उसने कहा–इस हरामजादे की वह गति करवाऊंगा कि वह याद रखेगा। गद्दी का झगड़ा था। उनके भाई का शायद जयसिंह या जयदेव नाम था। उसने क्या किया? वह दो चार गुंडो से बतलाया और उसने उनसे कहा कि राज दरबार में चोरी करके लाओ और इसके साथ ही दबा दो। इसको चोर बना दो। उन्होंने राजदरबार में चोरी करके धन लाकर अर्जुन साहब के समीप एक गढ़ा बना कर गाड़ दिया। वे भजन में बैठे थे। उन्होंने उनको नहीं देखा। साथ ही पीछे–पीछे पुलिस आ गई। पांव के निशान वहां मिल गए। आगे निशान नहीं गए। शायद वे वहीं बैठे थे। उनकी सलाह थी ही। उन्होंने कहा–धन तो कहीं यहीं है, देख लो। उन्होंने देखा। जगह का तो उनको पता था ही। गढ़ा खोदा तो धन निकल आया। उन्होंने पूछा कि यह धन यहां कैसे आया? उन्होंने कहा–अर्जुन

साहब दिन में भजन करता है और रात को चोरी करता है। यह बदमाश है। उसके भाई ने ऐसा काम किया। जब उसको बदमाश कहा तो उन्होंने पूछा–इसको क्या सजा देनी चाहिए? उसने कहा–इसको कुछ भी सजा दे दो। कोई भला आदमी था वह बोला कि अरे ! बड़े आदमी की तो बेइज्जती ही सजा होती है। उसका मरना हो जाता है। यह बड़ा महात्मा है। इसकी बेइज्जती कर दो। उसका काला मुंह करके गधे पर चढ़ा कर और जूतियों की माला डाल कर गांव के चारों तरफ चक्कर कटवा दिया। चक्कर कटवा कर वहीं लाकर छोड़ दिया। सारे गांव के लोग चले गए। कोई उनका गुरुमुख चेला था। वह पानी लाया, गर्म किया। उसने अपने गुरु को नहलाया। नहला, धुला कर तैयार करके बिठा दिया और उसके पांव में सिर टेक दिया। गुरुमुख का जगत भिखारी होता है। गुरुमुख चाहे सो कर सकता है। संत की बातें मुड़ जाती हैं। गुरुमुख की बातें नहीं मुड़ सकती हैं। सो उसने उसके चरणों में सिर रखकर कहा–महाराज जी ! एक बार इजाजत दे दो। मैं इस सारी नगरी को ही भस्म कर दूंगा। मेरे अंदर इतनी ताकत है। उन्होंने कहा–पगला ! फिर तो तू मालिक का कानून तोड़ता है। तू तो पागल है। पर उसने कहा–आप एक बार हुक्म दे दो। उन्होंने कहा कि यहां आ और बैठ। वह बैठ गया। उन्होंने उससे कहा कि मुझे ढेले का टुकड़ा दे। उन्होंने वह ढेले का टुकड़ा पहाड़ के ऊपर दे मारा। पहाड़ के दो टूक हो गए। मैंने तो यह बात सिक्खों से सुनी है। आज भी वह घाटी मौजूद है। पहाड़ के दो टुकड़े हो गए। उन्होंने कहा–तुमने देख लिया कि नहीं। इस ढेले के छोटे टुकड़ों ने इसे दो भाग बना दिए। पहाड़ टूट गया है। सो यह ताकत तो मेरे अन्दर भी है। मैं भी ये काम कर सकता हूं। पर मालिक का कानून नहीं तोड़ना चाहिए, कभी भी। संत मर्यादा पर चलते हैं। संतों की मर्यादा टूट जाती है तो

दरिया की मर्यादा भी टूट जाएगी। मालिक की मर्यादा भी टूट जाएगी। सो आप भी संतों के पास जाते हो। कभी किसी महात्मा के पास बैठते हो। अपनी मर्यादा में काम किया करो। तुम्हारी मर्यादा क्या है? तुम नेम टेम पर रहा करो। ब्रह्मचर्य का पालन करने की कोशिश किया करो। नेम टेम पर अपना काम किया करो। आप लोग तो समझते होंगे? नेम से फालतू न करो। टेम पर उस परमात्मा को याद किया करो। अगर कोई कहे कि हम बैठ नहीं सकते तो कोई बात नहीं।

बैठे ऊठे खड़े उताने, कहैं कबीर हम उसी ठिकाने।

जैसे मां कहीं फसल काटती है। कहीं पानी भरती है। वह अपने पुत्र को छोड़ कर जाती है। उसकी निगाह उसके पुत्र में रहती है। इसी तरह आप भी उस परमात्मा में निगाह रखा करो। वह परमात्मा हमारी मदद करता है। सो कुंज भी अपने अंडे देकर चली जाती है। जब वह वापिस आती है तो वे बच्चे उड़ारी लेकर उनसे मिल जाते हैं वे अपने मां–बाप को पहचान लेते हैं। कछुआ पानी में आधा कौस पर अंडे दे आता है। पानी में बैठे–बैठे उनको सेय लेता है और अण्डों से बच्चे निकल कर उस कछुए के पास चलकर पानी में आ जाते हैं। इसी तरह संत सतगुरु भी अपने शिष्य को याद रखते हैं और कभी भी उसको छोड़ते नहीं हैं। उसको सेय लेते हैं। आपने सुना होगा कई चेले छोड़ देते हैं। गुरु को छोड़ जाते हैं। पर गुरु जिसको पकड़ लेता है वह नहीं छोड़ता है। नहीं गलत बात है, चेला भी गुरु को नहीं छोड़ता है।

गुरु भी पूरा चेला भी पूरा। बड़े भाग से मेल मिलाई।।

जिसको पूर्ण सतगुरु मिल जाता है उनका उद्धार हो जाता है। ये थोड़ी बातें मैंने आपको बताई। यह भी सच है जिसको बनाई है उनको शांति मिलेगी इससे। क्योंकि जिन महात्माओं ने इतने काम किए और फिर भी शांति रही। आप भी घबराओ मत। यह

मत सोचो कि हम करें वह करें। मालिक ने हमारे ऊपर दया रखनी है। शांति से रहना सीखो। जीओ और जीने दो। केवल सतगुरु पर भरोसा रखो। सतगुरु किसे कहते हैं? जैसे मैं तो मजहब भी एक ही बताता हूं। जाति भी एक ही है। इसी तरह से मैं सतगुरु भी एक ही बताता हूं। वह सतगुरु सारी दुनिया का कर्ता है। वह रोम–रोम में रमा हुआ राम है। वह अकाल पुरुष, वह राधास्वामी दयाल सारी दुनिया का पिता है। वह सारी दुनिया का कर्ता वह सतगुरु है। उसे याद रखो। तुम्हारा कल्याण ही कल्याण है। उद्धार ही उद्धार है। भैड़े कर्मों से बचते रहो।

सो यहां तो सेवादारों का ही प्रबन्ध है। मैं तो केवल सत्संग कर सकता हूं और क्या कर सकता हूं। मैंने आपको बताया था। एक प्रेमी ने मुझ से कहा था कि मैं सिकन्दरपुर गया था। वहां बड़ा भारी प्रबन्ध था और बड़ी भारी शांति थी। मैंने कहा–यह बताओ कि सत्संग कैसा था? उसने कहा कि सत्संग तो तीन सुने, वही बातें थीं। मैंने कहा–मेरा काम तो सत्संग करने का है। सेवा करना तुम्हारा काम है। तुम सत्संग के मेंबर हो। मैं तो यहां का ट्रस्टी भी नहीं हूं। ट्रस्टी भी आप हो। मैंने कह दिया था मुझे ट्रस्टी बनने की जरूरत नहीं है। मुझे तो सेवा की ही जरूरत है। आप लोग सोचते हो कि मैं सब कुछ जानता हूं, करता हूं फिर भी मैं आफतें–दुख सहन करता हूं। क्या मैं उस परमात्मा के भजन को एक तरफ बैठ कर नहीं कर सकता हूं? पर मैं तुम्हारे लिए ही भारी आफतें उठाता हूं। देर सवेर आता हूं फिर जाता हूं मेरी ड्यूटी है। उस दाता ने मुझे ड्यूटी देकर भेजा था। वह मैंने अपनी पूरी करनी है। चाहे कोई कितना ही बुरा बोलो। गंदा बोलो। चाहे मंदा बोलो। मेरी ड्यूटी है। वह पूरी करके जाऊंगा चाहे कितना ही दुख आओ, सुख आओ। जैसे तुम अपने घर की ड्यूटी बजाते हो। मुझे भी सत्संग की ड्यूटी बजानी है। आगे उस मालिक की मर्जी है। जैसे

करेगा वही सहन करेंगे।

पर मेरे सत्संगियो, प्रेमियो ! बातें जो कहनी थीं वह आपको कह दी। अपना सुमरन ध्यान किया करो। ये संसार की बातें हैं। संसार में तो चरक चूं में पानी पीना है। उस चरक चूं को कोई छोड़ नहीं सकता है। कौन इसे समझा सकता है? फिर भी संत महात्माओं ने अपना जीवन सुधारा है और सत्संगियों ने भी अपना जीवन सुधारा है।

यहां सत्संगियों का प्रेम है जो मेरी इज्जत का ख्याल रखते हैं। सभी के दिल में यह ख्याल आता है कि सतगुरु की इज्जत है। जो यहां इज्जत की जाती है वह सतगुरु की इज्जत है। यहां जो ख्याल रखा जाता है। वह सतगुरु का ख्याल है। सतगुरु राजी तो कर्ता राजी। मैं तो यही कहता हूं कि मालिक सब को शान्ति दे। सभी को राधास्वामी।

।। राधास्वामी ।।

आगामी मास के सत्संग

2 फरवरी	**गुरुवार (बसन्त पंचमी)**	**अण्टा**
12 फरवरी	**रविवार**	**सिवानी**

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अक्तूबर/नवम्बर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1. दादरी	26 दिसम्बर -	01 जनवरी
2. सिवानी	02 जनवरी -	08 जनवरी
3. हिसार	09 जनवरी -	15 जनवरी
4. हांसी	16 जनवरी -	22 जनवरी

राधास्वामी सत्संग (दिनोद)
सत्संग सूची वर्ष 2006

2 फरवरी	गुरुवार	(बसन्त पंचमी)	अण्टा
12 फरवरी	रविवार		सिवानी
5 मार्च	रविवार	(वार्षिक)	भिवानी
13 अप्रैल	गुरुवार	(बैसाखी)	हाँसी
11 जुलाई	मंगलवार	(गुरु पूर्णिमा)	भिवानी
9 अगस्त	बुधवार	(रक्षा बंधन)	दादरी
22 सितम्बर	शुक्रवार (जन्म दिन बड़े महाराज जी)		दिनोद
1 अक्तूबर	रविवार	नजफगढ	(दिल्ली)
24 अक्तूबर	मंगलवार	(भैया दूज)	सोनीपत
5 नवम्बर	रविवार (वार्षिक)		भिवानी

कर्म का फल

महर्षि शिवव्रत लाल जी

ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। यह अटल नियम है। जिस चीज से तुम सम्बन्ध रखते हो, उससे कुछ न कुछ ले मरते हो और रचना का सर्व व्यापक अटल नियम कभी इसका उल्लंघन नहीं करता। सूर्य पृथ्वी से तरी का कर (टैक्स) लेता है और वर्षा ऋतु में कैसी उदारता से मेघ की झड़ी लगाता है। लेना और देना दोनों साथ-साथ चलते हैं। कोई करनी निष्फल नहीं होती। हर 'दान' के साथ उसका फल मिलता है और यह फल उस दान का परिणाम है जिसको हम निष्फल हुआ जान लेते हैं।

कभी न समझो कोई 'कर्म निष्फल' जाता है। कहा गया है-जैसा करोगे वैसा पाओगे। उस हाथ दो इस हाथ लो। कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जैसा बोता है, वैसा काटता है। फल की कुंजी हमारे जीवन के साथ गुंथी व बंधी हुई रहती है।

जो जीव उच्च अधिकारी है वह ख्याति और प्रतिफल से वंचित नहीं रह सकते। सम्भव है यह फल उसी समय मिल जाये और वह शक्तियां जो गुप्त रूप में हमारी लगन को जारी रखने में अंग-संग रहती हैं, उसको प्रकट करने में भी सहायक हो जायें। यह भी सम्भव है कि इस फल की प्राप्ति में हमको हजारों जन्म का इन्तजार करना पड़े। नियम मौजूद है। वह समय पर अपना फल देने का प्रबन्ध करता है और जो प्राणी इस नियम को समझते हैं वे हमारे भाव को समझने में भूल न करेंगे।

करनी करें तो क्यों डरे, क्यों पाछे पछिताय।
बोये पेड़ बबूल के, आम कहां से खाय।।

अनमोल वचन

जिस तरह अग्नि से मिलने पर कोई वापिस नहीं आता, उसी प्रकार सन्त से मिलने से मनुष्य वापस नहीं आता (भाव आवागमन का चक्कर खत्म हो जाता है)

—सन्त नाम देव जी

मन पर्वत के समान विशाल और कठोर था। परन्तु जब इस पर शब्द रूपी टाँकी की चोट लगी तो इसके अन्दर से सोने की खान निकली। तू शब्द की खोज करके मन को वश में कर। यही मालिक से जुड़ने का सहज मार्ग है।

—सन्त कबीर साहिब जी

सतगुरु के मुख से उचरे हुये सच्चे शब्द और हाथी के दांतों में बड़ी समानता है। गज-दंत किले के दरवाजे को तोड़ते है और गुरु के शब्द अनन्त कर्मों को तोड़ते हैं।

—सन्त दरिया साहिब

ज्ञान-सार

दूसरे की प्रसन्नता से मिली हुई वस्तु दूध के समान है, मांग कर ली हुई वस्तु पानी के समान है और दूसरे का दिल दुखाकर ली हुई वस्तु रक्त के समान है।

सच्चे धर्मात्मा मनुष्य को किसी की भी गरज नहीं होती, प्रत्युत दुनिया को ही उसकी गरज (आवश्यकता) रहती है।

भारतवर्ष में जन्म लेकर भी मनुष्य भगवान में न लगे, यह बड़े आश्चर्य और दुख की बात है। क्योंकि भारत वर्ष में जन्म मुक्त होने के लिये ही होता है। इसलिये देवता भी भारतवर्ष में जन्म चाहते हैं।

शरीर को संसार से और स्वयं को परमात्मा से अलग मानना गलती है।

सत्संग भावांश सोनीपत 3.11.2005

किसी की संगति और दृष्टि का प्रभाव उसके साथ वालों पर उनके न चाहते हुए भी पड़े बिना नहीं रह सकता है। यह एक प्रकृत्ति का सिद्धान्त है। इससे कोई बच ही नहीं सकता है। इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार अपनी विशेष शुद्ध भावनानुसार भोजन तैयार करके खिलाने वाली एक पवित्र महिला किसी भी व्यक्ति में मनोवांछित परिवर्तन ला सकती है।

कई बहनें मेरे पास आकर शिकायत करती हैं कि मेरा घर वाला शराब पीकर झगड़ा करता है। आप उसकी शराब छुडवा दो। मैं कहता हूं कि यह काम तो वे स्वयं भी कर सकती है। उनको यह पता नहीं है कि इसी देश की सावित्री ने अपने पति को यमराज के हाथों में से छुडवा लिया था। अनुसूया ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश छः-2 महीने के बना दिए थे और अहिल्या ने युग बदले थे। वह नाम का मन्त्र तो उन बहनों को स्वयं को भी मिला हुआ है। वे तो अपने पति के संग रहकर उन्हें भोजन और चाय-पानी आदि खिलाती-पिलाती हैं। वे अपनी शक्ति को ही नहीं समझती हैं। वे तो हर काम बाबा जी से ही करवाना चाहती हैं। निःसन्देह यदि उसमें निश्चय और धैर्य हो तो वे उनके पतियों में स्वयं ही मनचाहा परिवर्तन ला सकती हैं। परन्तु उनकी दृष्टि और संगति के प्रभाव और अपने नाम और उसकी शक्ति के प्रयोग करने का पता नहीं है या उनमें विश्वास की कमी है। कहते हैं कि-

जल देखे शुचि उपजे, साधु देखे ज्ञान।
माया देखे लोभ उपजे, तिरिया देखे काम।।

इस दोहे की पंक्तियां दर्शन और संग दोनों के ही प्रभाव को बहुत स्पष्ट करती है। संग और दर्शन के प्रभाव से बचना चाहते हुए भी कोई बच नहीं सकता है। भोजन और चाय आदि के तो कण-कण में बनाने वाले की दोनों ही शक्तियों का प्रभाव हो जाता है। फिर यदि भोजन बना कर खिलाने वाली महिला अपने पति के भोजन, चाय को बनाते और खिलाते-पिलाते समय प्यार, प्रेम और उसी भावना के साथ नाम का सुमरन भी करेगी, तो निश्चित ही उसको चमत्कारिक मनचाहा परिणाम प्राप्त हो जाएगा।

किसी के भोजन आदि को कोई क्षण भर भी देख लेता है तो उसका भी प्रभाव हो जाता है। इसीलिए यह हमारे देश की परम्परा रही है कि भोजन और जलपान एकान्त में ही ग्रहण करने चाहिएं। हमारे देश में यह परम्परा भी थी कि रजस्वला स्त्री को चौंके में नहीं जाने देते थे। हिन्दुस्तान तो एक परम्पराओं का देश रहा है। अफसोस है आज इसकी ये सभी परम्पराएं टूट रही हैं। यद्यपि ये सभी परम्पराएं बहुत ही छोटी-2 दिखाई देती हैं परन्तु इनके बड़े भारी दूरगामी परिणाम होते हैं।

यहां यह बताना भी आवश्यक है कि किसी गन्दे व्यक्ति द्वारा बनाए गए भोजन को भी कभी ग्रहण नहीं करना चाहिए। आज समाज में पतन इसीलिए आ रहा है क्योंकि आज की परिस्थितियों के वश में होकर लोग अपनी इन परम्पराओं का निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त न वे दर्शन और संग के प्रभाव को महत्त्व देते हैं और न ही नाम की रीति और शक्ति को जानते हैं क्योंकि पहले के युगों में तो नाम की रीति थी ही नहीं। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि-

सतयुग, त्रेता, द्वापर बीता। काहू न जानी शब्द की रीता।।
कलियुग में स्वामी दया विचारी, प्रकट करके शब्द पुकारी।।

■

''दिनांक 10.8.05 को परम सन्त हुजूर कंवर जी महाराज ने मेरे बड़े भाई मनोज कुमार के पास बंगलौर में चरण फेरी की कृपा की। मैं और मेरा पूरा परिवार पहले से ही वहां पहुंच गए थे। महाराज जी ने हम पर बड़ी कृपा की और एक बहुत बड़ी मौज बख्शी। मौज को उसी वक्त हम नहीं समझ पाए। मेरे सतगुरु महाराज 12.8.05 को बंगलौर से वापिस दिनोद के लिये पधारे।

दूसरे दिन छोटा भाई राजबीर और उसकी पत्नी रीना, कोटायम (कोचीन) केरल चले गए। रीना के पेट में आठ महीने का बच्चा था। रीना ने डॉक्टर से डेट चैक करवाई तो डॉक्टर ने कहा कि बच्चा पूरा नहीं है। एक हाथ और एक पांव नहीं है और न तो बच्चा बचेगा और न ही रीना (बच्चे की मां)। भाई राजबीर के डॉक्टर द्वारा ऐसी रिपोर्ट देने पर होश उड़ गए और उसी वक्त मेरी मां को सारी बातों से अवगत कराया। मेरी मां और मैं महाराज जी के पास दिनोद आए और महाराज जी को बताया। महाराज जी ने उसी वक्त कहा-चिंता की कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा।

मेरे सतगुरु महाराज ने कहा-राजबीर और रीना को ढाणी बुला लो। राजबीर और रीना दो तीन दिन टिकट न मिलने के कारण आने में लेट हो गए। महाराज जी ने फिर फोन से हमें पूछा कि अभी तक वो क्यों नहीं आए। हमने बताया कि वो एक दो दिन बाद आ जाऐंगे। महाराज जी ने कहा कि जल्दी बुला ले। जब राजबीर और रीना आने लगे तो रीना के पेट में तकलीफ हो गई।

राजबीर, रीना को वापिस कोचिन ले गया उसी डॉक्टर के पास जिस डॉक्टर ने रिपोर्ट में बताया था।

मेरे सतगुरु जानी जान हैं। मेरे मालिक ने हम पर जो मौज की, उसको देखकर डॉक्टर भी हैरान रह गया, बच्चा भी सुरक्षित हुआ और बच्चे की मां रीना भी सुरक्षित। डा., रीना, राजबीर तीनों इस आश्चर्य को देखकर दंग रह गए। सतगुरु ने हम पर बड़ी दया मेहर की। हम सतगुरु के आभारी हैं।''

राधास्वामी !

-जयबीर पुत्र श्री महेन्द्र सिंह
गांव/पो. ढांणी सांकरी (हांसी)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

विशेष सूचना

'राधास्वामी सन्त सन्देश' पत्रिका की वार्षिक सदस्यता 31.12.2005 को समाप्त हो रही है अगले वर्ष 2006 का वार्षिक शुल्क 40/-रूपये, 5 वर्षीय शुल्क 200/-रूपये एवं आजीवन शुल्क 500 रुपये है, नकद, मनीआर्डर एवं बैंक ड्राफ्ट द्वारा सचिव, राधास्वामी सत्संग भवन (दिनोद), रोहतक रोड़, भिवानी -127021 को अपना शुल्क 31.12.05 तक अवश्य भेजकर रसीद प्राप्त कर लें।

कृपया अपना पता पूरा और स्पष्ट लिखें जिससे पत्रिका ठीक समय पर मिल सके।

कहानी

मालिक और गुरु के इम्तहान लेने की आरजू मत कर

एक दिन किसी उद्दण्ड ने, जिसको मालिक की समर्थता पर विश्वास नहीं था, हजरत अली से कहा कि तुम कोठे पर बैठे हो, मालिक रक्षक और सहाई है, यह भी तुम जानते हो। हजरत अली ने कहा, क्यों नहीं? उस शख्स ने कहा-अच्छा तो फिर कोठे से नीचे गिर पड़ो ताकि मालिक की रक्षा पर तुम्हारे विश्वास का मुझे यकीन हो जाये और तुम्हारे मालिक पर भी मुझे विश्वास पैदा हो।

हजरत अली ने कहा-बस, चुप हो जा, कहीं तेरी जान इस जुरअत का शिकार न हो जाये। भला बंदे की क्या मजाल कि अपने खुदा का इम्तिहान ले। अहमक। यह तो खुदा ही का मन्सब है कि वह हर सांस पर अपने बंदों की अजमाईश करे ताकि हमारा हाल हम पर रोशन हो जाये कि हम अपने दिल की गहराईयों में उसके विश्वास पर किस कदर मजबूत हैं। भला जिसने जमीन और आसमान पैदा किए, उसका इम्तिहान कोई क्या लेगा? तू पहले अपना इम्तिहान ले। उसके बाद दूसरे को याद रख, जहां तेरे दिल में खुदा के इम्तहान की इच्छा पैदा हुई कि तेरे दीन की मस्जिद झाड़-झंखाड़ से भर गई। जब तेरे दिल में मालिक की परीक्षा लेने की ख्वाहिश उठे, समझ ले कि तेरी कमबख्ती आई। अगर तू अकलमंद है तो चाहिये कि फौरन अपने चित को अन्तर में चरणों की तरफ लगावे और ऐसे वहम को फौरन निकाल दे।

■

कर्म का फल (कहानी)

वेद, शास्त्र, ईश्वर और महापुरुषों के वचनों में तथा परलोक में जो प्रत्यक्ष की भांति विश्वास है एवं उन सबमें परम पूज्यता और उत्तमता की भावना है-उसका नाम श्रद्धा है।

जब तक इन्द्रिय और मन अपने काबू में न आ जायें तब तक श्रद्धापूर्वक कटिबद्ध होकर तीव्र अभ्यास करते रहना चाहिये। जितना ही श्रद्धापूर्वक तीव्र अभ्यास किया जाता है, उतना ही इन्द्रियों का संयम होता जाता है। अतएव इन्द्रिय-संयमकी जितनी कमी है, उतनी ही साधन में कमी समझनी चाहिये और साधन में जितनी कमी है, उतनी ही श्रद्धा में त्रुटि समझनी चाहिये।

वेद, शास्त्र और महापुरुषों के वचनों को तथा उनके बतलाये हुये साधनों को ठीक-ठाक न समझ सकने के कारण, उस पर भी विश्वास न होने के कारण जिसको हरेक विषय में संशय होता रहता है, जो किसी प्रकार भी अपने कर्तव्य का निश्चय नहीं कर पाता वह मनुष्य अपने मनुष्य जीवन को व्यर्थ ही खो बैठता है।

जिस संशययुक्त पुरुष में न विवेक शक्ति है और न श्रद्धा है उसका अवश्य पतन हो जाता है।

संशययुक्त मनुष्य केवल परमार्थ से भ्रष्ट हो जाता है, इतनी ही बात नहीं है, जब तक मनुष्य में संशय विद्यमान रहता है, वह उसका नाश नहीं कर लेता, तब तक न तो इस लोक में यानि मनुष्य शरीर में रहते हुये धन, ऐश्वर्य या यम की प्राप्ति कर सकता है और न ही किसी प्रकार के सांसारिक सुखों को ही भोग सकता है।

ईश्वर है या नहीं, है तो कैसा है, परलोक है या नहीं, यदि है तो कैसे है और कहां है, शरीर, इन्द्रिय, मन और बुद्धि-ये सब

आत्मा हैं या आत्मा से भिन्न हैं, जड़ हैं, या चेतन, व्यापक हैं या एक देशीय, जीवात्मा हैं या आत्मा से भिन्न हैं, जड़ हैं या चेतन, आत्मा एक है या अनेक, कर्मबन्धन से छुटने के लिये कर्मों को स्वरूप से छोड़ देना ठीक है या कर्मयोग के अनुसार उनका करना ठीक है। अथवा सांख्ययोग के अनुसार साधन करना ठीक हैं-इत्यादि जो अनेक प्रकार की शंकाएं तर्कशील मनुष्यों के अन्त:करण में उठा करती है इन समस्त शंकाएं निश्चय कर लेना, किसी भी विषय में संशय युक्त न रहना अपने कर्तव्य को निर्धारित कर लेना, यही विवेक ज्ञान द्वारा समस्त संशयों का नाश कर देना है।

जिसके मन और इन्द्रिय वश में किये हुए हैं, अपने काबू में हैं, उस पुरुष के शास्त्र विहित कर्म ममता आसक्ति और कामना से सर्वथा रहित होते हैं, इस कारण कर्मों में बन्धन करने की शक्ति नहीं रहती।